लौहित्य साहित्य सेतु : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

अर्जुन कुमार जुरो की कविताएँ

मूल: राभा
अनुवाद : जयश्री काकति

मूल : 1
आङि छोना हाछङ्

आङि हाछङि चिका झरा
चिथोकाय पान बॉ
आङ् नारङ् पाकेन तङा नामा
नाङि-आङि कामि-हाबा तङ्चाकाय जोवाय
आङ् नारङ् पाकेन खेरे मुनि खुछि खारा।

आङि आछुकाय मायदाङ्चाकाय जोवाय
आङ् नारङ् काफाय रिबाय नुवा
नारङि नाछि आङि दुक गौने राङा
नारङ् कानिना नामचाकाय काथा
आङ् फामाने छिलिति चोके राऑ।

आङ् मौङ्चाय नेकेन फरे
नाङि बमाय रौजामदङ्
किजानबा नाङ् निमिन दुक माना
किजानबा नाङ् राओचाता
अनोबा नाङ् दुको तेपेने चिङो नाछि बमाय चोके राऑ।

अनुवाद : 1
सोने की जन्मभूमि

मेरी पृथ्वी के नदी-झरने
हरे पेड़-पौधे
मैं तुममें ही विलीन हो जाता हूँ
तुम्हारे मेरे खाली समय में
तुम्हारे साथ मैं सृष्टि का जयगीत गाता हूँ।

उबाऊ असह्य पलों में
तुम्हारी छाया में मन की बातें करता हूँ
तब जैसे मुझे नया जीवन मिलता है
कहने की इच्छा न होनेवाली बातों को भी मैं समझ पाता हूँ।

इसीलिए जीने की हजारों आशाएँ हैं।
आँखें खोल सोकर उठते ही
तुम्हारे प्यारे हृदय में कदम रखता हूँ।
तुम्हें शायद कष्ट होता है।
शायद तुम्हें बहुत बुरा लगता है।

फिर भी तुम दुखों को छिपाकर हमें हमेशा प्यार
करती हो।

मूल : 2
फागुनि राङछ्रि

हादाबुर प्रोङ्काय जोवा
ब्राचाकाय फागुनि राङछ्रि
ते राङ्ग्रे आफे दगिनो ना दगोचा
अनोबा नाङो चामे छमय पॉ ताना।

मरङि बाचङ्फाङि
चिरुक पायप्रोक मक्काय
लाओ-लाथा अरङि खुराङि
नाङि मुङि क्रौमुचि छुना जाङ्चा।

फारमाजारि दाछमाने
चातालाना आङ् दगोते रिबिया
हिरि-हिरि राम्पार आङो तये थेङे रेङा
मुनि नाङो मानकाय गौन खापाकिना कब्राके राङा।

अनुवाद : 2
फाल्गुन की शाम

धूल उड़नेवाला वह समय
फाल्गुन की शाम का
आज तारा भी नहीं है, चाँद भी नहीं है
फिर भी तुम्हारी राह देखकर समय काटता हूँ।
फाटक के बाँस की झुरमुट में
मैना, बुलबुल का नाचना और गाना
उनके कोलाहल में
तुम्हारे नाम पर प्रेम की कविता लिखना नहीं हुआ।
मध्य रात्रि जागकर
आँगन पर निकल आता हूँ
सर-सर मलयानिल मुझे छू जाता है।
तुमको पाने की खुशबू मुझे पागल करती है।

मूल : 3
आया

बारछिङ् खेरकाय
आयानि चातालाय
आङ् तरुरु नुखार रौमा।

दुकनि छानि आङि नुकचि
आयानि नेन आनचोलि मुचिया
उनि छौमब्रुक्काय मिनिति खेनत्रेङ्काय जौमाङ्
थेका।

आयानि ताचि खुकि
पौला रौजामा तौराङा
जीवन मुङिनि छदव आयनि बमायान माना।

अनुवाद : 3
माँ

जुगनू के खेलनेवाले
माँ के प्यारे आँगन में
मैं खुशी से सो जाता हूँ।
दुख के दिनों के मेरे आँसू

माँ के आँचल से पोंछता हूँ।

माँ की मीठी हँसी में मेरे हजारों सपनों का जनम होता है।

माँ की पतली उँगलियों में

क ख ग घ सीखता हूँ।

जीवन नाम का प्यारा शब्द माँ की गोद में ही पाता हूँ।

मूल : 4
चाब्रा मेचा

रेङाबे लागिनोन चाओचाबे

खापाक फालचा कये

नाछिकाय आयानि बमाय राखाते

फामानचाकाय नुकचाकाय नुकिना पिदान बुरिब्रा चाङे।

आया आङो लागिचा छोनानि चाङ्खा

लागिचा आङो बाजारनि चिथोकाय नेन

आङ् काकाय ताक्काय

रिफान छाक्काय पाजार आछुङे तानकाय तोवा।

पिदान नुकिनि पिदान बुरिब्रा चाङे

दुक-छुक पाके खेरे

बेदोबा मिनिनो आरो बेदोबा

छुकक छुक खामो आया नाङो मुनि किये।

अनुवाद : 4
बेटी

एकदिन तो जाना ही पड़ेगा

हृदय को मचोड़कर

प्यारी माँ की गोद छोड़कर

अनदेखे अनजाने घर में नई बहू बनकर।

माँ मुझे नहीं चाहिए सोने का कंकण

नहीं चाहिए कीमती कपड़े

मेरे लिए मैंने खुद बुना है

रिफान पाजार[1] प्यार से संजोकर रखा है

नए घर की नई बहू बनकर

दुख और सुख के साथ खेलूँगी

कभी हसूँगी और कभी तुम्हारी याद आने पर

चुप-चुप कर रोऊँगी।

1. राभा लोगों द्वारा व्यवहृत वस्त्र

संपर्क-सूत्र:

अर्जुन कुमार जुरो
गाँव: दायरङ्
डाक: गोवालपारा, असम

जयश्री काकति
प्रवक्ता, सरकारी हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण
महाविद्यालय,उत्तर गुवाहाटी